गोवा में राजभाषा हिंदी का वर्तमान

डॉ० रवींद्रनाथ मिश्र

आजादी के चौदह वर्षों के पश्चात् गोवा को पुर्तगाली शासन से 1961 में मुक्ति मिली। गोवा मुक्त होने के बाद कई मायनों में अपनी अस्मिता की तलाश कर समृद्ध होता रहा। मंडल-कमंडल की देश-व्यापी उठा-पटक की राजनीति में भी इसने सांप्रदायिक सद्भाव एवं शांति की अद्भुत मिसाल कायम की। भाषा, साहित्य, कला, धर्म, दर्शन आदि की दृष्टि से गोवा अपना विशिष्ट स्थान रखता है। विगत तीन-चार वर्षों से सत्ता परिवर्तन की राजनीति से इसकी गरिमा को धक्का लगा है। अन्यथा गोवा देश के अन्य प्रांतों की अपेक्षा एक खुशहाल राज्य है। 3,702 किलोमीटर में फैले हुए इस राज्य की कुल आबादी लगभग 12 लाख है जिसमें 37,073 लोग हिंदी मातृभाषी हैं।

गोवा की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपरा कई मायनों में विशिष्ट रही है। भाषा की समृद्धि में उसका परिवेश बहुत कुछ उत्तरदायी होता है। यहाँ के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में मराठी और कोंकणी के संबंध में भले ही विरोध रहा हो लेकिन हिंदी को लेकर कभी कोई विवाद नहीं हुआ। गोवावासियों ने तो मुक्ति के पूर्व हिंदी का समर्थन इसलिए किया कि मुक्त होने के बाद यहाँ की राजकाज की भाषा हिंदी होगी। कालांतर में जब अंग्रेजी उन पर थोप दी गई तो इन्हें बहुत निराशा हुई। पुर्तगालियों के कठोर शासन के दौरान ही 1939 में काकासाहेब कालेलकर के आगमन से गोवा में हिंदी-प्रचार का कार्य शुरू हुआ। इस दिशा में पूना और वर्धा की हिंदी प्रचार सभाओं ने सराहनीय कार्य किया। हिंदी की विभिन्न परीक्षाओं का आयोजन कर लोगों में हिंदी के प्रति जागृति पैदा की। 1946 में डॉ० रामनोहर लोहिया के हिंदी भाषण का प्रभाव गोवा वालों पर खूब पड़ा। भारी संख्या में लोग भाषण सुनने के लिए आए। उस समय यहाँ हिंदी राष्ट्रीय भावना के प्रतीक के रूप में जानी जाती थी। गोवा की जनता में हिंदी के प्रति लगाव था, लेकिन तत्कालीन शासन की तरफ से विरोध।

गोवा की मुक्ति के पश्चात् हिंदी को फलने-फूलने का भरपूर अवसर मिला। राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ने पर समस्त नीतियों का पालन शुरू हुआ। शिक्षा संस्थाओं में कक्षा पाँचवीं से दसवीं तक हिंदी अनिवार्य कर दी गई। मुक्तिपूर्व हिंदी प्रचार-प्रसार की संस्थाएँ अब सक्रिय रूप से कार्य करने लगीं। संचार माध्यमों और पर्यटकों के द्वारा हिंदी गोवा में काफी लोकप्रिय हुई। गोवा में मराठी, कोंकणी और अंग्रेजी बोली जाती है। मराठी और कोंकणी की लिपि देवनागरी है इसलिए हिंदी सीखने में इन्हें दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा। सिनेमा के गीतों ने हिंदी को गोवा के सुदूर अंचलों तक पहुँचाया। अब तो दूरदर्शन झुग्गी-झोपड़ियों में भी हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रहा है। हिंदी के प्रचार में जहाँ शिक्षा संस्थाओं ने नींव का कार्य किया वहीं पर मीडिया ने लोकप्रियता दिलाई।

गोवा नैसर्गिक सुषमा की दृष्टि से जितना सुंदर है उतना ही यहाँ के लोग भी उसकी निश्छलता पवित्रता और कोमलता से प्रभावित हैं। यही कारण है कि सांस्कृतिक भाषा हिंदी को आत्मसात करने में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया गया। डॉ० नेमिचंद जैन ने एक जगह अपने भाषण में कहा है कि "हिंदी की पाचनशक्ति समुद्र की तरह है, जिसने किसी को भी गले लगाने से कभी इंकार नहीं किया।" गोवावासियों ने कोंकणी की बड़ी बहन के रूप में हिंदी को गले लगाया। इसके माध्यम से अपने साहित्य को समृद्ध भी किया। 'गोवा में हिंदी की स्थिति एवं विकास का अनुशीलन' लघुशोध विषय पर कार्य करते हुए मैंने कोंकणी साहित्यकारों का साक्षात्कार लिया तो कई विद्वानों ने बताया कि "कोंकणी उपन्यास लिखने में प्रेमचंद और फणीश्वरनाथ 'रेणु' मेरे प्रेरक रहे हैं। उनकी आंचलिकता ने मुझे बहुत प्रभावित किया।" यहाँ कोंकणी भाषा के राष्ट्रीय स्तर के आयोजनों में हिंदी विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है। इसके साथ अन्य भाषाओं के शीर्ष रचनाकारों का भी सहभाग रहता है। भारतीय भाषाओं में कोंकणी यहाँ समन्वयात्मक भूमिका का निर्वाह कर रही है।

गोवा में नवंबर से मार्च तक लाखों की संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक आते हैं और यहाँ की मधुर स्मृतियाँ अपने साथ लेकर पुनः आने की इच्छा को संजोए हुए जाते हैं। गोवा चर्चों, मंदिरों, समुद्रतटों, पहाड़ियों, नदियों, नारियल और काजू से लदे वृक्षों, विभिन्न संस्कृतियों, उत्सवों और त्यौहारों का प्रदेश है। कहा जाता है कि इसका निर्माण भगवान परशुराम ने किया था। जिसकी अपनी पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरवगाथा है। गोवा के प्रति अन्य प्रांतों के लोगों के मन में यह आम धारणा है कि यह मौज-मस्ती का प्रदेश है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। इस मान्यता को हम नकार नहीं सकते, लेकिन यहाँ भारतीय संस्कृति की भावना भी जनमानस में कूट-कूट कर भरी है।

गोवा की उक्त विशेषताओं के कारण यहाँ का जनमानस उन्नति की ओर अग्रसर है। इस प्रकार के माहौल में निश्चित रूप से भाषाओं का भी विकास हो रहा है। कक्षा पाँचवी से 10वीं तक हिंदी अनिवार्य होने के कारण गोवा में 1,50,000 से अधिक विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। यहाँ के 80 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में से 60-70 विद्यालयों में तथा 22 महाविद्यालयों में से 14 महाविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। 1962 में मात्र दो महाविद्यालय थे। 1965 में पी.जी. सेंटर की स्थापना की गई। जिसमें केवल दो प्रश्नपत्र के रूप में हिंदी पढ़ाई जाती थी। कालांतर में छः प्रश्नपत्र पढ़ाए जाने लगे। 1985-86 में गोवा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इसके पूर्व उच्च शिक्षण संस्थाएँ मुंबई विश्वविद्यालय के अंतर्गत थीं। विश्वविद्यालय बनने के बाद प्रो० अरविंद कुमार पांडेय (भूतपूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, गो० वि०) के कुशल निर्देशन में हिंदी विभाग खुला और एम० ए०, एम०फिल० तथा पी०एच०डी० का अध्ययन प्रारंभ हो गया। विगत 15 वर्षों में लगभग 200 विद्यार्थी एम० ए०, 12 एम०फिल० और 16 पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त कर विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों और सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थानों में कार्य कर रहे हैं।

गोवा में हिंदी की प्रगति में गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ मडगाँव, मुंबई हिंदी विद्यापीठ, गोवाशाखा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, गोवा शाखा, हिंदी की शैक्षणिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'प्रयास' तथा कला वैभव आदि संस्थाएँ विभिन्न परीक्षाओं, निबंध प्रतियोगिताओं, कवि-सम्मेलनों, हिंदी कार्यशालाओं और व्याख्यानों आदि कार्यक्रमों के माध्यम से सहयोग प्रदान कर रही हैं। सितंबर मास में सरकारी गैर सरकारी और शिक्षा संस्थाओं द्वारा हिंदी के अनेक कार्यक्रम संपन्न होते हैं। इससे हिंदी को और बढ़ावा मिलता है। गोवा के गाँवों की अपेक्षा शहरों में हिंदी का प्रचलन अधिक है। यहाँ के प्रमुख पाँच नगरों पणजी, वास्को, मडगाँव, फोंडा और म्हापसा आदि में से वास्को और मडगाँव में हिंदी भाषियों की संख्या अधिक है। वास्को में भारतीय नौसेना का मर्मगोवा पोर्ट ट्रस्ट और रेलवे स्टेशन होने के कारण उत्तर भारत के अधिकांश यहाँ लोग निवास करते हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी है। मडगाँव व्यापारिक शहर होने के कारण वहाँ हिंदी का बोल बाला अधिक है। गोवा के ग्रामीण अंचल में कोंकणी और मराठी बोली जाती है। प्रकल्प कार्य के दौरान गाँव वालों से जब हमारी बात हुई तो मुझे इस बात का अनुभव हुआ कि वे हिंदी थोड़ी बहुत समझ लेते हैं लेकिन बोल नहीं सकते। यह बात पढ़े-लिखे लोगों पर लागू नहीं होती। अशिक्षित और कम शिक्षित जनमानस में हिंदी का प्रचार-प्रसार नहीं है। गोवा की राजधानी पणजी में कला अकादमी के माध्यम से हिंदी के कतिपय आयोजन होते रहते हैं। >

गोवा भारत का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल होने के कारण यहाँ देशी-विदेशी लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं। वे साथ में अपनी भाषा और संस्कृति को भी लाते हैं। देशी पर्यटकों में उत्तर भारत के लोगों की संख्या अधिक होती है। और उनके संप्रेषण का माध्यम हिंदी ही होती है। इस कारण व्यापारी लोग अच्छी हिंदी बोल लेते हैं। भारत में हिंदी के प्रचार में संतों और व्यापारियों की महत्वूर्ण भूमिका रही है। गोवा में 1998 में कुल देशी पर्यटकों की संख्या 9,53212 थी। इन पर्यटकों के द्वारा यहाँ दुकानें, बस स्टैंडों, रेलवे स्टेशनों, गलियों-नुक्कड़ों, होटलों, समुद्र तटों, मंदिरों और गिरजाघरों आदि स्थानों पर हिंदी बोली जाती है।

हिंदी यहाँ की राजकाज की भाषा नहीं है और न ही मातृभाषा है फिर भी यह जन-जन तक पहुँच रही है। इसमें सबसे बड़ा योगदान मीडिया में दूरदर्शन का है। चूँकि 'गोवा दूरदर्शन' से मात्र एक घंटे का कार्यक्रम कोंकणी-मराठी में आता है, इसलिए शेष समय में हिंदी के कार्यक्रमों को ही लोग देखते हैं। दूरदर्शन और मेट्रो के अधिकांश कार्यक्रम हिंदी में ही होते हैं। केबल की सुविधा होने से थोड़ा फर्क आया है।

हिंदी गोवा की लोकप्रिय भाषा बने, इसके लिए हिंदी वालों को भी कोंकणी और मराठी सीखनी चाहिए। इससे विचारों के आदान-प्रदान में सुविधा होगी और हम एक दूसरे की संस्कृति को अच्छी तरह समझ सकेंगे। साहित्य सर्जन की दृष्टि से भी अच्छा होगा। अनुवाद के माध्यम से एक-दूसरे की संस्कृति का ज्ञान भी होगा। इस दिशा में अभी भी बहुत कुछ प्रयत्न करना बाकि है।

दरअसल भाषा को राजनीति, धर्म एवं प्रांत से अलग हटकर देखना चाहिए। यह तो दो आत्माओं को जोड़ने का काम करती है। इसमें तो हमारी संस्कृति और राष्ट्रीय भावना की खुशबू है। जिस प्रकार पुष्प किसी के प्रति भेदभाव नहीं करता उसी प्रकार भाषा भी सबकी संपत्ति है। इसे कोई भी स्वीकार कर सकता है। लेकिन दुखद पक्ष यह है कि इसे राजनीति, धर्म और प्रांत का शस्त्र बनाया जा रहा है। आजादी के बाद सबसे बड़ी भूल यही हुई कि भाषा के आधार पर प्रांतों का विभाजन किया गया। जो भी हो गोवा इन सभी दीवारों का अतिक्रमण कर हिंदी की प्रगति में सक्रिय योगदान देकर राष्ट्रीय भावना को पुष्ट कर रहा है।